ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 85-88

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन

1. इन्द्र प्रकाश सिंह 2. अजय कुमार दुबे

1. शोध अध्येता, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– शिक्षक – शिक्षा विभाग, टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 22.10.2019, Revised- 28.10.2019, Accepted - 04.11.2019 E-mail: endrambasingh@gmail.com

सारांश : **मनुष्य के जीवन में मूल्यो का अहम योगदान होता है। मूल्य वे आदर्श होते हैं जिन्हे ग्रहण कर व्यक्ति लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उन्मुख होता है। मूल्यों के द्वारा जहाँ व्यक्ति में साहसीपन, प्रतिष्ठा तथा सृजनात्मकता, उपलब्धि की भावना का विकास होता है, वहीं अपने समाज के प्रति आकर्षण तथा समर्पण की भावना का विकास होता है। मानवीय मूल्य ही नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में वृद्धि करते हैं। जिससे व्यक्ति पूर्ण रूप से समाजिकता को प्राप्त करता है। किशोर तथा किशोरियों में प्रमुखतया नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन दिया जाना परम् आवश्यक है। सामाजिक शान्ति, सद्भाव तथा अन्तःकरण जागृत करने के लिए मूल्यों तथा दृष्टिकोणों को, जो कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक आदर्श के समान है, को विकसित किया जाना समाज का उत्तरदायित्व है। मूल्य जो कि लिंग भेद के आधार पर, ग्रामीण तथा शहरी आधार पर वितरित नहीं होते हैं परन्तु शैक्षिक स्तर के आधार पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों में अन्तर पाया जाता है। जो विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करता है।**

कुंजी शब्द – साहसीपन, प्रतिष्ठा, सृजनात्मकता, आकर्षण, समर्पण, नैतिक, मूल्य, अन्तःकरण, जागृत।

मानव विकास का वर्तमान स्वरूप उसके अतीत की झांकी प्रस्तुत करता है। वर्तमान की अनेक श्रेयस वस्तुएं अपने अतीत की परिष्कृत रूप होती है। भारतीय संस्कृति में भी अतीत के सद्विचार, गुण एवं मूल्यों को पोषित एवं पल्लवित करके उनका सुन्दर प्रतिरूप वर्तमान विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। यहां संस्कृति का मूल्य, प्राण, धर्म, एवं सदाचार सदैव से ही धारण योग्य रहा है।

किसी भी मनुष्य के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान होता है, क्योंकि इन्ही के आधार पर सही गलत, उचित–अनुचित की परख की जाती है। परिवार समाज तथा विद्यालय के अनुरूप ही एक मनुष्य में सामाजिक गुणों तथा मूल्यों का विकास होता है। मूल्य वह मानक होते हैं जिसके द्वारा किसी कार्य के लक्ष्य चुने जाते हैं। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री तथा समाज कार्य के प्रोफेसर– डॉ0 राधाकमल मुकर्जी ने अपनी विख्यात पुस्तक – 'The structure of value' में दी गयी परिभाषा में स्पष्ट किया कि– मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत इच्छाएँ और लक्ष्य होते हैं जिन्हें कंडीशनिंग, सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया से आत्मसात् किया जाता है। जो व्यक्ति की अपनी पसन्दें, मानक और महत्वाकांक्षाएँ बन जाते हैं।

एक तरह से मूल्य शिक्षा के नीति निर्देशक तत्व है जो शिक्षा को दिशा प्रदान करते है। इसके द्वारा शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। मूल्य विहीन शिक्षा निरर्थक और निर्जीव समझी जाती है। मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। मूल्य एक व्यक्ति के पसन्द किये गये विचार और व्यवहार होते हैं। यह एक ऐसा व्यवहार होता है जिसकी हम दूसरे से अपने लिए अपेक्षा करते हैं। अर्थात मूल्य व्यक्तित्व को दिषा निर्देषित करते हैं।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा – पाल, पी0 सी0 (1996): ने अपने अध्ययन, 'किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं द्वारा मूल्य अभिविन्यासीकरण' में पाया कि शहरी किशोर तथा किशोरियों में अपने समाज के प्रति अधिक परिपक्वता के साथ सामंजस्य पूर्ण सम्बन्ध देखने को मिला तथा किशोरों में किशोरियों की अपेक्षा अपने लक्ष्य के प्रति अधिक संवेदनशीलता देखने को मिली, तथा उन्होंने यह भी पाया कि विज्ञान क्षेत्र से आने वाले किशोर तथा किशोरियों में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक कठिन कार्य करना तथा साहसीपन देखने को मिला, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले किशोरों में प्रायः स्वः अनुशासन, व्यक्तिगत खुशी, प्रतिष्ठा तथा आर्थिक वापसी, राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति दृष्टिकोण देखने को मिला, वहीं शहरी क्षेत्रों के किशारों में आनन्द एवं सुरक्षा, सृजनात्मक उपलब्धि के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण देखने को मिला।

जमेन, जी0 एस0(1999): ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक, धार्मिक, तथा नैतिक मूल्यों का उनके नैतिक व्यवहार, व्यक्तिगत विशेषता तथा व्यक्तित्व समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन किया तथा पाया कि

1. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों में नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों की प्रधानता तथा सामाजिक मूल्य में कमी देखने को मिला।
2. नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. किशोरों की अपेक्षा किशोरियों में सभी मूल्यों की अधिकता पायी गयी।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

4. नैतिक मूल्य की अपेक्षा सामाजिक मूल्य व्यक्तित्व समायोजन में जिम्मेदार है।

5. सभी प्रकार के मूल्य व्यक्तित्व समायोजन की अपेक्षा चरित्रिक विशेषता के लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

सिंह, संध्या (2011): ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के क्षेत्र व लिंग के आधार पर जीवन मूल्यों का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के बीच तथा छात्र तथा छात्राओं के बीच मूल्यों को देखते हुए कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों में भी लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शुक्ला पवन कुमार (2013) ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उ0 प्र0) से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में अध्ययनरत उच्च सुविधा प्राप्त किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन पर शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ कि– ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में अध्ययनरत उच्च सुविधा प्राप्त किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल्य की अवधारणा का विकास– किसी भी इन्सान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान होता है। क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा–बुरा या सही–गलत की पहचान की जाती है। इन्सान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना परिवार ही होता है और परिवार समाज का एक अंग है। उसके बाद उसका विद्यालय जहाँ से उसे शिक्षा हासिल होती है। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है। प्राचीनकाल में भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा भी जरूरी होती थी। लेकिन वक्त के साथ यह कम होता चला गया और आज वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की भागीदारी लगातार घटती जा रही है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता और चोरी डकैती आदि बढ़ती प्रवृति समाज में मूल्यों के विघटन के ही उदाहरण हैं।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद – 15 भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव की मुखालफत करता है। हाल ही में नई दिल्ली स्थित एन सी0ई0आर0टी0 ने वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक मूल्यों की सूची तैयार की है। इसका बदलाव भी हम प्राथमिक स्तर की पाठ्य–पुस्तक में भी देख सकते हैं।

लिंक महोदय के शब्दों मेंः– ''मूल्य मानक रूपी मानदण्ड है। जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने स्थित किया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं''।

प्रो0 अर्बन ने अपनी पुस्तकः– ''फन्डामेन्टल ऑफ इथिक्स'' में लिखा है कि– ''मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो तथा केवल वही परम रूप ले और साध्य रूप में मूल्यांकन है, जो आत्माओं के विकास या आत्म साक्षात्कार की ओर ले जाय।''

इण्टरनेशनल डिस्कवरी ऑफ एजूकेशन (1978) के अनुसार– मूल्य वे विश्वास होते हैं जो क्या उचित या अनुचित है के बारे में होते हैं।

प्रो0 राधाकमल मुकर्जी के अनुसार – ''मूल्य एक व्यक्ति के पसन्द किये गये व्यवहार तथा विचार होते हैं।''

मूल्य तथा व्यक्तित्व समायोजन – मूल्यो में पृथक्कीकरण या अलग होने की प्रवृत्ति से सामाजिक कुशलता और व्यक्तित्व के समायोजन में बाधा आती है। मूल्यों में संयुक्तता, मिश्रण या सहयोग से समाज में समझ और भलाई होती है और लोगों के परस्पर सम्बन्धों में पूर्णता आती है। –बोगल'

मूल्य एकता के साधन के रूप में कार्य करते हैं। मूल्य समाज–सापेक्ष होते हैं। यही कारण है कि यद्यपि प्राचीन मध्यकालीन और आधुनिक समाज के मूल्यों में भिन्नता होती है। तथापि इसका अर्थ यह नहीं माना जा सकता है कि आज प्राचीन मूल्यों का कोई महत्व या सार्थकता नहीं रह गयी है।'

मूल्यों की प्रकृति तथा विशेषताएँ – वस्तुतः मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है, जिसके कारण समाज का अस्तित्व है। क्योंकि उपयोगिता या कल्याणकारिता की भावना ही समाज को स्थिर रखती है। मूल्य एक ऐसी आचार संहिता है जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपने जीवन पद्धति का निर्माण करता है। जीवन मूल्य में मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समाहित हैं।

आलपोर्ट के विचार में – ''मूल्य वह विश्वास है जिस पर व्यक्ति प्राथमिकता से कार्य करता है।'' एक विशेष संस्कृति या समाज के मूल्य तर्क और उसमें उपलब्ध सूचना या जानकारी पर आधारित होते हैं। चूंकि मूल्य में भावनात्मकता का तत्व होता है अतः व्यक्ति के दृष्टिकोण या विश्वास बहुत जटिल होते हैं उन्हें बदलना कठिन होता है।

मूल्य के तीन अंग होते हैं – 1. ज्ञानात्मक (Cognitive) 2.भावनात्मक (Emotional)
3. व्यवहारात्मक (Behavioural)

मूल्यों का वर्गीकरण – प्राचीन काल में मनुष्य पशुवत जीवन जीता था, तब उसे जीवन के लिए अत्यधिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

संघर्ष करना पड़ता था। उस समय शक्तिशाली ही जीवित रह सकता था तब संघर्ष और शक्ति ही जीवन मूल्य रहे होंगे। धीरे–धीरे मनुष्य प्राकृतिक जीवन से सामाजिक जीवन की ओर अग्रसर हुआ जिससे संघर्ष और शक्ति के स्थान पर प्रेम, सहानुभूति और सहयोग का महत्व था, जिससे निर्बल लोगों का जीवन भी सुरक्षित हुआ। प्रेम सहानुभूति और सहयोग को हम मूलभूत सामाजिक नियम, आदर्श सिद्धान्त, व्यवहार, मापदण्ड अथवा मूल्यों की संज्ञा दे सकते हैं।

भारतीय दार्शनिकों ने मूल्यों को दो भागों में विभक्त किया है– 1. आध्यात्मिक मूल्य 2. भौतिक मूल्य

अरबन के अनुसार मूल्यों की संख्या आठ है–

1. शारीरिक मूल्य 2. आर्थिक मूल्य 3. मनोरंजक मूल्य 4. साहचर्य मूल्य 5. चारित्रिक मूल्य 6. सौन्दर्य बोधात्मक मूल्य 7. बौद्धिक मूल्य 8. धार्मिक मूल्य

अमेरिकी तर्कशास्त्री 'लेविश' ने मूल्यों को चार वर्गों में विभाजित किया है – 1. आन्तरिक मूल्य 2. वाह्य मूल्य 3. अन्तर्निहित मूल्य 4. साधन मूल्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) – ने विद्यालय के समस्त संसाधनों को बालक के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिक विकास पर अत्यधिक बल दिया।

नैतिक शिक्षा समिति (1985) – जिसके अध्यक्ष जे0 डी0 शुक्ला जी थे ने कक्षा एक से आठ तक नैतिक शिक्षा को जोड़ने का प्रतिवेदन किया।

जिससे सामाजिक आर्थिक स्तर, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सके। राष्ट्र की उच्च माध्यमिक शिक्षा शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षा के रीढ़ की हड्डी के समान है। इस स्तर पर बालक में मूल्यों के विकास पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है।

किसी भी बालक को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर उसे सम्पूर्ण रूप से प्रशिक्षित करना अति आवश्यक है। उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा के अनेक पक्ष हैं– जिसमें मूल्यों का प्रशिक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, चरित्र निर्माण की शिक्षा इत्यादि। अतः इसकी स्थापना के लिए मानसिक क्षमता को उर्ध्वमुखी करने की आवश्यकता होती है और यह शक्ति केवल शिक्षक द्वारा ही संभव है।

मूल्य से सम्प्रत्यय है जिनके साथ संवेग घनिष्ठ रूप से जुड़े रहते हैं। ये वे सम्प्रत्यय हैं जो वांछित है, जिनका चयन बालक उपलब्ध सविधियों, साधनों तथा कार्यों के सहयोग से करता है। प्राथमिक रूप से यह विषयनिष्ठ होते हैं। इसलिए मानव व्यवहारों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करतें हैं। (एलिजाबेथ हरलॉक)

शहरी तथा गैर शहरी क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों के अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में प्रजातांत्रिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, धार्मिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया –: (शर्मा, श्रीमति रमा, 2009)

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों जैसे– सहयोग, स्पष्टता, साहस, शिष्टाचार, सम्पूर्ण स्वावलम्बी, दायित्वबोध, अनुशासन, समानता, अनुसरण, सदाचार, आभार, ईमानदारी, मानवता, दयालुता, नेतृत्व और राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, दूसरों के लिए समन, सादा जीवन, आत्म–विश्वास, आत्म–निर्भरता, दलीय–पवित्रता, सार्वभौमिक सत्य, वैश्विक प्रेम एवं सार्वजनिक एवं राष्ट्र के लिए प्रेम को आधार मानकर किये गये नवाचार अध्ययन में देखा गया कि विद्यार्थियों के प्रत्येक बौद्धिक एवं नैतिक शक्ति और शक्ति में शारीरिक, संवेगात्मक मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति को विकसित करती है तथा यह भी देखा गया कि मूल्यों का शिक्षण एवं स्तर के अनुसार मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुभव अधिगम के प्रयासों द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं। – (पी0 सुभराज 2009)

पाठ्य सह्गामी क्रियाओं का भी छात्रों के मूल्यों पर प्रभाव देखा जा सकता है। प्रायः यह देखा गया है कि पाठ्य सह्गामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुण की सक्रियता की मात्रा कम रहती है। जिसका प्रभाव छात्र तथा छात्राओं में प्रमुखता से देखा जा सकता है। अतः सहगामी क्रियाओं द्वारा छात्रों में विभिन्न प्रकार के मूल्यों में बढोत्तरी की जा सकती है।

सह्गामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राएं – निष्क्रिय, निरूत्साही, दब्बू प्रवृत्ति, अविश्वासी, विसादयुक्त व निम्न व्यक्तित्व स्तर वाली पायी गयी। इसके विपरीत भाग लेने वाले विद्यार्थियों में उक्त मूल्यों की प्रधानता पायी गयी। अतः प्रत्येक स्तर पर छात्र–छात्राओं के मूल्यों की मात्रा में सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों पर शिक्षकों की प्रभावशीलता, अभिवृत्ति इत्यादि का भी प्रभाव पड़ता है।

अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरों में अत्यधिक आकांक्षा स्तर के साथ–साथ सभी मूल्य अपरिपक्व अवस्था में ही, लेकिन विश्वास के साथ भरे होते हैं। यही विश्वास मजबूत होकर एक सभ्य, स्वस्थ्य तथा मजबूत शिक्षित समाज तथा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

अंधविश्वास मुक्त विश्व का निर्माण करेगा। जहां उच्च माध्यमिक स्तर पर समस्याओं की जटिलता होती है वहीं पर विद्यार्थियों में कुछ कर गुजरने की क्षमता भी होती है। इस अवस्था में विद्यार्थियों में उचित मूल्यों के विकास के लिए तथा स्वयं की भावनाओं को समझने व पहचानने के लिए शिक्षक, विद्यार्थियों को परिष्कृत वातावरण, प्रोत्साहन व सुरक्षा की भावना, प्रभावी व स्वस्थ्य संरक्षण स्वस्थ्य मानसिकता युक्त वातावरण प्रदान करता है। जिससे उनमें आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वास, सहकारिता, स्वावलमबन, सम्प्रेषण, योग्यता का प्रभावी रूप से विकास हो सके।

निष्कर्ष :– समसामयिक परिदृश्य में मूल्यों का शैक्षिक महत्व है। मानव जीवन में सफलता के लिए मूल्यों का विशेष स्थान है। मूल्यों को अर्जित करके तथा सीख करके उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। मूल्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के क्रिया–कलापों को सकारात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं। जिससे छात्र स्वयं समस्याओं का अनुभव करके तनाव दूर करने, द्वन्दों एवं दुविधाओं को दूर करने सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन करके तथा वर्तमान एवं भविष्य में आपे वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु सक्षम हो सकें। मूल्य विद्यार्थियों के उत्साह में संचार करके श्रेष्ठता के साथ कार्य सम्पन्न करने की क्षमता को बढाने तथा असामयिक वातावरण में उचित निर्णय लेने हेतु सफल बनाते हैं। मूल्य विद्यार्थियों को मनोशारीरिक रूप से स्वस्थ्य जीवन का अवसर भी प्रदान करती है। जिससे व्यक्ति को मानसिक, धार्मिक, व्यवहारिक तथा राजनैतिक रूप से सफलता के अवसर प्राप्त हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कोठारी अतुल, (2009): मूल्यों की शिक्षा, नई दिल्ली।
2. गुप्ता, एस0 पी0 (2015): अनुसंधान संदर्शिका (सम्प्रत्यय कार्यविधि एवं प्रविधि), शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
3. जीमेन. जी0 एस0 (1997): स्टडी आफ सोशल, रीलीजियस एण्ड मोरल वैल्यू आफ स्टुडेन्ट आफ क्लास XI एण्ड देयर रीलेशनसीप वीथ मोरल कैरेक्टर, ट्रेट एण्ड पर्सनैलिटी एडजस्टमेन्ट, पी–एच0 डी0 एजूकेशन अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
4. पाण्डेय रामशकल, (2011): मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. पाल, पी0 सी0 (1996): ए0 स्टडी आफ वैल्यू ओरिएन्टेशन्श ऑफ एडोलसेन्स व्याय एण्ड गर्ल, पी–एच0 डी0 साइकोलाजी एम0 एस0 युनिवर्सिटी, बड़ौदा।
6. रूहेला, एस0 पी0: शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार आगरा पब्लिकेशन आगरा–2।
7. सिंह, यशपाल (2016) : एन.सी.सी. एवं एन.एस. एस. में प्रतिभागी छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन इंडियन एजूकेशनल रिव्यू 2001, वोल्यूम 37 (1), 73–83

*****